

COUNSELLING PSYCHOLOGY

Introduction:-

परामर्शन एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो एक विशेषज्ञ द्वारा व्यक्तिगत परिस्थिति में सहायता की आवश्यकता का अनुभव करने वाले व्यक्ति को दी जाती है। इस प्रकार की सहायता की प्रक्रिया में एक व्यक्ति सहायता की आवश्यकता का अनुभव करता है और दूसरा व्यक्ति अपने अनुभव, ज्ञान और प्रशिक्षण के आधार पर इसकी सहायता करता है। वर्तमान युग में जीवन जटिल हो जा रहा है, तीव्र गति से सामाजिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास एवं परिवर्तन के कारण व्यक्तिगत जीवन में अनेक समस्याएँ आती हैं। परामर्शक पारस्परिक सम्बन्धों द्वारा दूसरे व्यक्ति को एव दिशा दिलाता है जिससे इसका तनाव या अनिश्चितता की स्थिति समाप्त हो जाती है और वह स्वयं अपने अथवा अपनी समस्या के सम्बन्ध में निर्णय लेने में सक्षम हो जाता है।

परामर्शन दो व्यक्तियों के बीच, जिसमें एक कुशल एवं अनुभवी होता है और दूसरा व्यक्ति समस्याग्रस्त होता है, प्रगतिशील पारस्परिक सहयोगात्मक सम्बन्ध है, जिसमें दूसरा व्यक्ति अपनी समस्या का स्वयं विश्लेषण करने और निदानात्मक उपाय ढुंढने में सक्षम हो जाता है। परामर्शन की प्रक्रिया में ग्रस्त व्यक्ति अपने असन्तोष या कमी के ताल को समझने का प्रयास करता है और समय परिस्थित एवं आवश्यकतानुसार अपने विचारों कार्यशैली और व्यवहार में परिवर्तन करने के योग्य बन जाता है। परामर्शन एव ऐसी विद्या है जिसमें समस्याग्रस्त व्यक्ति अपनी समस्या निःसकोच एवं निडर होकर दूसरे व्यक्ति से कहता है और दूसरा व्यक्ति अपनी समस्या का इस प्रकार विश्लेषण करता है कि पहला व्यक्ति पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपनी समस्या के निवारण हेतु आक्रमण करने के लिए तैयार हो जाता है।

परामर्शन सेवा व्यक्ति को अपनी विविध समस्याओं का अपने स्तर पर सामाधान करने हेतु समर्थ बनाती है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति की स्वयं की समझ को बढ़ाता है, जिससे वह स्वयं अपनी समस्या हल करने के योग्य बन जाता है। परामर्शन व्यक्ति के आत्म बोध (Self-understanding) आत्म-निर्देशन (Self-direction) आत्म सिद्धि (Self-Realization) और आत्म उन्नयन (Self-actualization) में सहायक होता है। अतः सामान्य परामर्शन एक व्यक्तिगत सहायता है जिससे व्यक्ति अपनी शिक्षा सम्बन्धी अथवा अन्य व्यक्तिगत समस्या को अपने दृष्टिकोण से देखने और समझने की योग्यता प्राप्त करता है। वह अपनी समस्याओं और कमजोरियों को पहचानने लगता है और उन पर विचार पाने को हृदय संकल्पित हो जाता है।

कार्ल रोजर्स एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक है, इन्होंने परामर्श को परिभाषित करते हुए कहा - "परामर्श एक ऐसा सम्बन्ध है जो परामर्शी को स्वयं को समझने में पूर्ण सहायता प्रदान करता है जिससे कि वह अपने नवीन ज्ञान के प्रकाश में नया कदम ले सके।"

ट्रेक्सलर ने परामर्श के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए यह बताया कि - परामर्श एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने व्यक्तिगत संशोधनों का इस्तेमाल करते हुए अपनी स्कूली या अन्य संस्थाओं सम्बन्धी समस्याओं का सामाधान करता है। एसट्रेंग (Strang) का कहना है कि - परामर्श आग्नेय-सामने का सम्बन्ध है जिसमें परामर्शदाता तथा परामर्शी दोनों में विकास का आगमन होता है।

इस प्रकार से वारनर, टैलवर्ट, एडमोस तथा विली तथा एनडू ने अपने अपने तरीके से परामर्श के स्वरूप पर प्रकाश डाला है। यहाँ पर परामर्श की ऐसी परिभाषा दी जा रही है जो सभी परिभाषाओं का केन्द्र है, जो निम्नलिखित है:-

परामर्श एक ऐसी जटिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मुख्य रूप से दो व्यक्ति परामर्शी तथा परामर्शदाता प्रत्यक्ष रूप से आमने सामने के सम्बन्धों में लगाव की अवस्था में एक दूसरे के सहयोगी बनकर मिलते हुए सिर्फ परामर्शी की समस्या का ही समाधान नहीं करते बल्कि परामर्शी में आत्मनिर्मिता, आत्मबल तथा आत्मसुख का भी विकास करते हैं।

उपरोक्त परिभाषा का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित बातें पाये जाते हैं :-

1. परामर्श एक जटिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
2. यह दो व्यक्तियों का सम्बन्धों में लगाव की अवस्था है जिसमें एक व्यक्ति परामर्शी तथा दूसरा परामर्शदाता होता है।
3. यह प्रत्यक्ष रूप से आमने सामने की लगाव की अवस्था है जिसमें दोनों एक दूसरे के सहयोगी बनकर कार्य करते हैं।
4. दोनों का इच्छित समस्या का समाधान होता है।
5. दोनों मिलकर समस्या का समाधान करते हैं।
6. समस्या का समाधान परामर्शी में आत्मनिर्मिता, आत्मबल तथा आत्मसुख का विकास करता है।

इस प्रकार से यह देखते हैं कि यह परिभाषा अपनी विशेषताओं के द्वारा सिर्फ परामर्श के स्वरूप पर ही अधिक से अधिक प्रकाश नहीं डालती है, बल्कि परामर्श की विशेषताओं पर भी प्रकाश डालती है।